62 nd Kerala School Kalolsavam, January 4 to 8, 2024, Kollam

Item Code: 952 Participant Code: 108

=> देखते ही स्तब्ध रह गया ... ।

-> तकदीर की खेल में स्तब्ध......

रात के समय में वह बूढ़ा आदमी उन सलाखों के पीछे बैठकर अपने यादों को ताज़ा कर रहे थे। आखिरकार कल वह अपने परिवार से मिलने वाले है। उनसे मिलने का दृश्य न जाने कितने बार धर्मेंद्र सिंह अपने मन में देखा है। वह रात के गहराई में बैठकर अपने माथे में पड़ा सफेद बालों को कांपते उँगलियों से कानों के पीछे छिपाया। तब उसके झुरियाँ भरे गालों में आँसू तो नदी समान बह रहा था। आग की चिंगारी जैसे छोटे-छोटे जुगनू उसके हाथों में आकर बैठ गया। "सब लोग मेरे इंतज़ार में होंगे।"- वह अपने आप से कहा।

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

अब तो पंद्रह साल हो गया है, जब से धर्मेंद्र सिंह इन सलाखों के पीछे एक अपराधी के नाम लेकर बैठ गए है। किसको पता था कि उसके तकदीर तो किसी और के अपराध को अपने कंधों में लेने के बारे में था। "धर्मेंद्र जी...। जरा एक बार के लिए तो अपने आँखों को बंद कर दो न... आप को पता है ना? अब हम ही आपको यह ऋद्दय से बचा सकते हैं"।- अब भी धर्मेंद्र सिंह के कानों में इन लोगों के आवाज गूँज रही है।

पंद्रह साल पहले वह अपने गाँव में एक अच्छा सरकार अफसर के नाम में प्रस्तुत थे। उस आदमी ने कभी भी किसी से रिश्वत नहीं ली है, न ही कोई बुरा काम कर के बुरा नाम कमाई है...। मगर.... जब वह ऋद्दण के फाँसी में मरने ही वाले थे.... तब उसे कुछ ऐसा करना पड़ा कि उसे

अपने परिवार लोग से दूर....एक चार-दिवारों वाले कमरे में अपने पूरी जिंदगी बिताने पड़ा। वह अपनी पत्नी और दो बच्चों को गली में भीख माँगने के लिए बिल्कुल भेज नहीं सकता था। अगर समय में ऋण नहीं भर लिया तो घर से गलियों में भटकना होगा। कोई और कंधा देने वाला नहीं है। उस घर के सारा-का-सारा दायित्व उसके कंधों में है...। परिवार को आगे चलाना होगा... बच्चों को पढ़ाना होगा..। घर बनाने के लिए इतना बड़ा खर्चा भी आया है कि ऋण तो अब भरना मुश्किल हो गया है।

"अरे.. सुनो धर्मेंद्र जी..। आप ऐसे अच्छे नाम कमाने से क्या बन सकोगे। जरा अपना हस्ताक्षर यहाँ डाल दीजिए। हम सारा-का-सारा पैसा भर के देंगे..."- उन्होंने उस दिन धर्मेंद्र से कहा था।

अगर धर्मेंद्र अपना हस्ताक्षर वहाँ डाला तो, मतलब यह होता है कि वह गाँव के एक बड़ा मशहूर राजनीतिक के ~~अपार~~ अपराध अपने कंधों में लेगें। धर्मेंद्र को पता था कि इससे तो उसके नाम हमेशा के लिए बुरा बनेगा... पर यह भी सच था कि वह अपने घर और परिवार को बचा भी सकता था।

"रजनी...। लगता है मुझे यह करना होगा... तुम्हारे लिए और हमारे बच्चों के लिए..। शायद ईश्वर ने यह कहानी रचा है मेरे लिए..."। - यह जब उस दिन धर्मेंद्र सिंह अपनी पत्नी रजनी से कह रहा था, तब उनके आँखों में बसा दर्द आँसु के रूप प्राप्त कर के बारिश समान आँखों से बरस रहा था..। "आप ऐसा मत करो न... ज़रूर कोई और रास्ता होगा..." - रजनी अपनी काँपते होंठों को

दाँतों से दबाकर, एक नीली साड़ी की आँचल से अपनी मुँह को छिपाकर रो रही थी..। मगर धर्मेंद्र ने अपनी पत्नी को सहलाने की कोशिश करते हुए अपने हस्ताक्षर को.. और अपने पहचान को कुछ पैसे के लिए उन लोगों को बेचते है...। "पापा आप कहाँ जा रहे हो...? वापस आओगे ना?" – उनके दोनों बच्चें धर्मेंद्र से पूछे थे, जब पुलिस लोग उसे ले जाने के लिए आए थे..। तब धर्मेंद्र ने दोनों के माथे को चूमकर जवाब दिया था - "चिंता मत करना बेटा.. पापा ज़रूर वापस आऊँगा..। माँ की ध्यान रखना.. ठीक है..?" पापा लौटते ही दोनों को गले लगाएँगे..."।

"यह वादा पक्का है ना? पापा..।" "हाँ पक्का है।" – उस दिन.. पन्द्रह सालों के पहले धर्मेंद्र ने वादा दिया था। यह था, उनके बीच में हुआ

वह वार्तालाप...।

अचानक से आसमान रोना शुरू करता है...। बिजली गर्जने की आवाज़ सुनकर धर्मेंद्र ~~अपने~~ वर्तमान में आ जाते हैं...। कल धर्मेंद्र इन सलाखों के बाहर आने वाले हैं.. इस कारागृह से मुक्ति पाने वाले हैं...। यह बात सच तो है कि अब लोग उनको कड़वे नज़रों से ही देखेंगे..। मगर अपने परिवार के लिए ही वह इतना बड़ा त्याग कर के ज़िंदा बैठा है।

उस रात खूब बारिश बरसता है.. साथ में उनके आँखों में भी..।

आखिर एक अगला सुबह आ गया है। आज वह अपने गाँव जाने वाले हैं... परिवार से मिलने वाले हैं... वापस अपने घोंसले में जाने वाले हैं..। इतनी सारी दिनों वह इस दिन की इंतज़ार में बैठ रहे थे।

अपने परिवार को गले लगाते हुए वह चित्र अब तक हज़ारों बार वह अपने मन में बनाया है। उनसे यह वादा तो निभाने ही होगा..।

जब बाहर की हवा उसके सफेद बालों को सहलाया, उसे एक अजीब-सा अनुभूति मिला..। उसे ऐसा लगा कि यह एक पुनर्जन्म है...। वह अपने कमज़ोर पैरों धीरे-धीरे अपने घर की ओर चलाने लगे..। 'बच्चों तो अब बड़े हुए होंगे.. रजनी तो उस दिन से मेरा इंतज़ार में बैठी होगी...।' वह सोचने लगे..। रास्ते में लोग कड़वे निगाहों से देखते रहे। आखिरकार एक अपराधी के नाम से ही वह मशहूर थे..।

धीरे-धीरे वह आगे की ओर ही चलते रहे..। कल के जैसे ही आज भी बारिश बरसने लगा। सिर्फ बारिश ही नहीं, पर तूफान भी

हर तरफ कोलाहल मचने शुरू किया.. । उनके रास्ते में लोग इधर-उधर भाग रहे थे, अपने-आपको इस तूफान और बारिश से बचाने के लिए... । लेकिन वह बूढ़ा आदमी प्रतीक्षा भरी आँखों से आगे की ओर ही चलते रहें.. ।

सफर के अंत में वह वहाँ पहुँच ही ली.. । अपने घर के सामने.. । पर... अपने घर देखते ही...

वह दृश्य देखते ही स्तब्ध रह गया.. । जमीन को पूरी तरह से चूमकर उनके घर, और उसका अंदर रहने वाले तीन आत्माओं का भी दफ़न हो चुके थे.. । तूफान ने उन तीन दिल की धड़कनों और वह घर को भी अपना बना लिया था.. । लोग इधर-उधर भाग रहे थे... मगर धर्मेंद्र टूटे हुए दिल से स्तब्ध होकर वहीं रह जाते हैं।

~~उनके उसके सामने~~, वह दृश्य ने उनके सारी आशाओं को तोड़ ली.. । फिर जब रक्षा कर्मचारियों आकर उनके सामने उन तीन लोगों के मृतशरीर लेकर आते हैं, तब भी मरे हुए मन से वह स्तब्ध रह जाते हैं... । सबके शरीर को गले लगाते हैं... चूमते हैं.. ।

"पापा को माफ करो बेटा.. मैं वादा तुम्हें जिंदा देखकर निभाना चाहता था...।" यह वह बार-बार दोहराते हैं.. । यह दोहराते-दोहराते उनके मन खुद का पहचान भी भूल गए.। तो लोग उसे पागल धर्मेंद्र बुलाने लगते हैं.. ।

सालों भीत जाते हैं.. । मगर अब भी कमज़ोर काँपते हाँथों को जोड़कर वही टूटा हुआ घर के सामने वह घंटों तक स्तब्ध खड़े हो जाते हैं ।

उनको यह बात को निगलना बहुत मुश्किल लगते है..। इसलिए सालों के बाद भी वह बूढ़ा धर्मेंद्र सिंह, जिसने अपने पूरी जिंदगी अपनों के लिए त्याग कर लिया था, वह अभी भी इस दुर्घटना के स्थान में स्तब्ध होकर खडे हो जाते है...। किसी उम्मीद में कि, एक और बार उन्हे जिंदा देख पाएँगे...।

सबक : हमारे सबसे बड़ा दौलत अपने परिवार होते है...। उनके लिए कोई भी सीमा पार करने के लिए लोग तय्यार होते हैं। वह प्रेम के शक्ति उतना होते है।